

पाठ 6

भय का भूत

इस पाठ से हम सीखेंगे—

- भूत-प्रेत मन का वहम होता है।
- भय हमें कमजोर बनाता है।
- बिना जाँचे-परखे सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करना ठीक नहीं है।
- स ष और श वर्णों के उच्चारण और प्रयोग में अंतर।
- य और ज वर्णों के उच्चारण और प्रयोग में अंतर।

पाठ

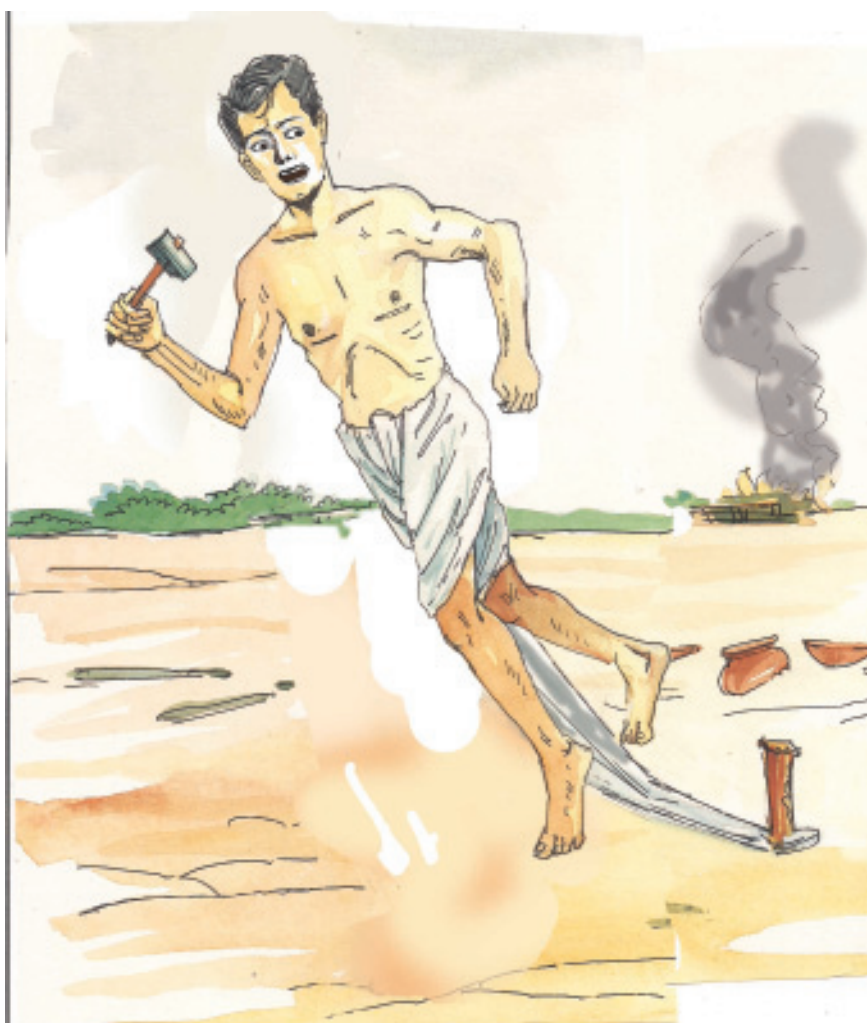
बात सलीमपुर गाँव की है। गाँव में चर्चा थी कि गाँव के श्मशान में भूत आते हैं। इससे लोगों के मन में भूतों का भय बैठ गया था। कुछ लोग कहते थे कि उन्होंने वहाँ भूतों के नाचने की आवाज़ें भी सुनी हैं। कुछ का कहना था कि उन्होंने वहाँ रात में आग जलते देखी है। जितने मुँह, उतनी बातें।

एक बार गाँव के कुछ लड़कों में शर्त लगी— जो आधी रात में श्मशान में खूँटा गाड़कर आएगा, उसे सौ रुपये मिलेंगे। शंकर ने कहा— “मैं जाऊँगा श्मशान। भूत-प्रेत सब मन का वहम है।”

शंकर ने कह तो दिया, पर मन ही मन वह डरा हुआ भी था। अगर सचमुच भूत हुआ तो! पर अब तो शर्त लग चुकी थी।

उसी रात शंकर खूँटा और हथौड़ा लेकर श्मशान पहुँच गया। डर के मारे उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। पर फिर भी हिम्मत करके वह हथौड़े से खूँटा गाड़ने लगा।

खूँटा गाड़कर वह वापस जाने के लिए मुड़ा, तो चल नहीं पाया। उसे लगा, उसकी धोती कोई पीछे से खींच रहा है। उसने चिल्लाना चाहा, पर डर से आवाज़ नहीं निकली। किसी तरह वह ज़ोर लगाकर दौड़ पड़ा। गिरते-पड़ते बदहवास-सा जब वह गाँव पहुँचा, तब उसे ध्यान आया कि वह तो बिना धोती के ही भाग आया है।



उसकी हालत देखकर दोस्तों ने पूछा—“शंकर, क्या हुआ?”

शंकर अब भी डर के मारे काँप रहा था। बोला—“भूत ने मेरी धोती छीन ली।” हँसी छिपाकर दोस्तों ने उसे दिलासा दिया।

अगले दिन सुबह शंकर दोस्तों के साथ श्मशान पहुँचा। वहाँ देखा कि खूँटे के साथ उसकी धोती का एक कोना ज़मीन में गड़ा हुआ है। यह देखकर सारा माज़रा उनकी समझ में आ गया।

गाँव आकर उन्होंने गाँव वालों को सारा किस्सा सुनाया। उस दिन से सबके मन से भूत का भय जाता रहा।

इनका मतलब जानिए—

शब्द

अर्थ

चर्चा	=	ज़िक्र, किसी विषय पर बातचीत
भय	=	डर
माज़रा	=	मामला
जितने मुँह, उतनी बातें	=	अलग-अलग तरह की बातें

आइए, यह भी जानें—

स श और ष वर्णों की पहचान और इनके प्रयोग में अंतर:

स, **श** और **ष** को हम अक्सर एक ही तरह से बोलते हैं, पर इनका प्रयोग अलग-अलग तरह से किया जाता है।

जैसे—

स — इसे बोलने में ऊपर और नीचे के दाँत नजदीक आ जाते हैं। इसीलिए इसे दंत्य **स** कहते हैं। जैसे—सलीमपुर, साथ, सारा, सहभोज।

ष – इसका उच्चारण सीधे कंठ या गले से होता है। इसे मूर्धन्य **ष** कहते हैं। **ष** के कुछ शब्द हैं— षट्कोण, विष, राष्ट्र।

श – इसे बोलने में जीभ तालु की तरफ जाती है। इसे तालव्य **श** कहते हैं। **श** के कुछ शब्द हैं— शेर, रोशनी, ताश, शंकर, शर्त, पलाश, शतरंज।

य और ज वर्णों का उच्चारण और इनके प्रयोग में अंतर:

कई बार लोग बोल-चाल में **य** की जगह **ज** का प्रयोग करते हैं। फिर उसे उसी तरह से लिखने भी लगते हैं। जैसे— यमुना को जमुना, यजमान को जजमान, यज्ञ को जज्ञ, यशोदा को जसोदा। इनमें सही शब्द हैं— यमुना, यजमान, यज्ञ, यशोदा।

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(क) सलीमपुर गाँव के लोग क्यों डरे हुए थे?

.....

(ख) शंकर के दोस्तों ने क्या शर्त लगाई थी?

.....

(ग) शंकर की धोती कैसे उतर गई?

.....

(घ) लोगों के मन से भूत का भय कैसे गया?

.....

2. सही वाक्य के आगे (✓) तथा गलत वाक्य के आगे (X) का निशान लगाइए:

- जैसे— सलीमपुर गाँव के लोग भूत से डरते थे। (✓)
- मन ही मन शंकर भी डरा हुआ था। ()
 - शंकर श्मशान में खूँटा गाड़ने गया था। ()
 - भूत-प्रेत मन का वहम नहीं है। ()
 - शंकर का कुरता खूँटे के साथ फँस गया था। ()

3. रेखा खींचकर सही शब्दों के जोड़े बनाइए:

- जैसे— भूत का वहम
जितने मुँह शर्त
सौ रुपये की भय
मन का उतनी बातें

4. नीचे लिखे वाक्य पूरे कीजिए:

- जैसे— सलीमपुर में चर्चा थी कि श्मशान में भूत रहते हैं।
- (क) लोगों के मन में.....
- (ख) भूत-प्रेत सब.....
- (ग) जो खूँटा गाड़कर आया, उसे.....
- (घ) शंकर को लगा, उसकी धोती कोई.....

5. नीचे लिखे शब्दों को सही करके लिखिए:

जैसे—	शट्कोण	षट्कोण	शहयोग	
	समसेर		साहश	
	षावन		जमुना	

आइए, करके देखें—

साहस की और अंधविश्वास दूर करने की कहानियाँ सुनिए और सुनाइए।

अब यह जानिए

हमारे देश में अब भी बहुत से लोग अंधविश्वास में जकड़े हुए हैं। अंधविश्वास के कारण तमाम लोग ठगे जाते हैं। तंत्र-मंत्र और झाड़ू-फूँक करने वाले ढोंगी लोग अंधविश्वास और अज्ञान का नाजायज़ फ़ायदा उठाते हैं। भूत-प्रेत होने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।